Class :- B.A. Part-I (Sub.) Paper. (2)

Topic :- मौर्य साम्राज्य के पतन का कारण :- April 16, 2020.

Continue from 13.04.2020 -

(ग.) दमनकारी नियम :

साम्राज्य के विखण्डन का मूल कारण प्रान्तों में दमनकारी नियम थे। बिन्दुसार के शासनकाल में, तक्षशिला के नागरिकों ने दुष्ट नौकरशाहों (दुष्टमात्यों) के कुशासन के खिलाफ कड़ुतापूर्ण शिकायत की। अशोक की नियुक्तियों से उनकी शिकायतों का निवारण किया गया, लेकिन जब खुद अशोक राजा बने तब भी नगर के नागरिकों की यही शिकायत थी। कलिंग के अभिलेखों के आदेशों से पता चलता है कि अशोक प्रांतों में हो रहे उत्पीड़न से ज्यादा चिन्तित थे और इसलिए महामात्रों को नागरिकों पर बेवजह अत्याचार करने को मना किया। इसके लिए उन्होंने तोसली (कलिंग) में, उज्जैन और तक्षशिला में अधिकारियों के फेरबदल की प्रक्रिया शुरू की। उन्होंने स्वयं 256 रातें तीर्थ में गुजारीं, जिससे प्रशासनिक पर्यवेक्षण में सहायता मिली। हालाँकि, इन सबके बावजूद वे सुदूर प्रान्तों में उत्पीड़न रोकने में विफल रहे और अशोक की सेवानिवृत्ति के बाद, सबसे पहले इस साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के अवसर का लाभ तक्षशिला ने उठाया।

(घ.) दूर-दराज के क्षेत्रों में नए ज्ञान की पहुँच :

हम जानते हैं कि मगध का विस्तार, इसकी मूलभूत भौतिक व्यवस्थाओं और बुनियादी सुविधाओं के कारण हुआ। एक बार जब इन सांस्कृतिक तत्वों के उपयोग का ज्ञान-प्रसार मध्य भारत, दक्कन एवं कलिंग तक पहुँच गया मगध साम्राज्य के केन्द्र जो कि गंगा का मैदान था उसकी महत्ता और वर्चस्व घटने लगा। सुदूर प्रान्तों में लोहे के औजारों एवं हथियारों के नियमित उपयोग जैसे-जैसे बढ़ता गया मौर्य साम्राज्य का पतन होता गया। मगध से प्राप्त भौतिक संस्कृति के आधार पर, नए राज्य स्थापित और विकसित होते गए। मध्य भारत में शुंग और कण्व, कलिंग में चेति और दक्कन में सातवाहनों के उदय को समझने के लिए इस संकेत के जरिए स्पष्ट तौर पर समझा जा सकता है।

(ङ.) उत्तर-पश्चिम सीमा की उपेक्षा और चीन की महान दीवार :

चूँकि अशोक मुख्यत: देश और विदेश में धर्म प्रचार में व्यस्त रहते थे, वे उत्तर-पश्चिमी सीमा की तरफ दर्रों की सुरक्षा पर ध्यान देने में असमर्थ थे।

Continue......

- Dr. Madan Paswan, History.

Dr. Madan Paswan, History,

class : B.A. Part-I (Hons.) Paper-1st April 16, 2020.

Topic :- Unit-I (i) भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ ·

Continue of 13.4.2020

निम्न-पुरापाषाण काल :-

मानव के इतिहास का यह आदि काल है। इस काल में मानव शिकार, जंगली फलों, कन्द-मूल आदि पर निर्भर करता था। वह ऐसे स्थानों पर रहता था जहाँ पानी, शिकार और उपकरण बनाने के लिए पत्थर उपलब्ध थे। भारत के विभिन्न भागों से इस काल से संबंधित उपकरण प्राप्त होते हैं। इन्हें दो प्रमुख भागों में विभक्त किया गया है — (क) चापर-चापिंग पेबुल संस्कृति,
(ख) हैण्ड एक्स संस्कृति।

पत्थर के टुकड़े, जिनके किनारे पानी के बहाव में रगड़ खाकर चिकने और सपाट हो जाते हैं, 'पेबुल' कहे जाते हैं। 'चापर' बड़े आकार वाला उपकरण है जो पेबुल से बनाया जाता है। चूँकि इसके उपकरण सर्वप्रथम सोहन नदी घाटी से प्राप्त हुए, इसी कारण इसे 'सोहन संस्कृति' भी कहा जाता है।

भारत में निम्न पुरापाषाण काल के उपकरण सोहन नदी की घाटी (पाकिस्तान के पंजाब प्रांत) से तमिलनाडु तक लगभग पूरे प्रदेश से प्राप्त हुए हैं। सोहन, सिन्धु नदी की एक छोटी सहायक नदी है। 1928 ई० में डी० एन० वाडिया ने इस क्षेत्र से पूर्वपाषाण युग का उपकरण प्राप्त किया। 1930 ई० में के० आर० यू० टाड ने सोहन घाटी में स्थित पिंडी घेब नामक स्थल से कई उपकरण प्राप्त किये। सोहन घाटी में सबसे महत्वपूर्ण अनुसंधान 1935 ई० में डी० टेरा के नेतृत्व में एक कैम्ब्रिज अभियान दल ने किया। इस दल ने काश्मीर घाटी से लेकर साल्टरेंज तक के विस्तृत क्षेत्र का सर्वेक्षण किया। उन्होंने हिम तथा अन्तर्हिम (Glacial & Interglacial) कालों के क्रम के आधार पर पाषाण कालीन सभ्यता का विश्लेषण किया। सोहन घाटी के उपकरणों को आरंभिक सोहन, उत्तरकालीन सोहन, चौन्तरा तथा विकसित सोहन नाम दिया गया है। सोहन की 5वीं तथा अंतिम वेदिका से मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े मिलते हैं। इस काल के उपकरण लिद्दर (Lidddar) (कश्मीर), नर्मदा, बेलन (उत्तर प्रदेश), सोन (मध्य प्रदेश) प्रवरा (गोदावरी की सहायक) तथा कृष्णा आदि क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं। उपकरणों के अतिरिक्त इनमें से कुछ नदी घाटियों से हाथी, जंगली भैंसा, जंगली बैल, दरियाई घोड़ा आदि जानवरों के जीवाश्म भी पाये गये हैं। निम्न-पुरापाषाणकालीन मानव इन्हीं जानवरों का शिकार करने के लिए पत्थर के औजार बनाता रहा होगा।

Continue..........